IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 28, Issue 8, Series 1 (August. 2023) 76-80
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

तंत्री नाद ईश्वर साधना का एक माध्यम

दीपिका तिवारी

Research scholar, म्यूजिक , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म. प्र)
Research scholar = Deepika Tiwari
(Music , Awadhesh Pratap singh vishwavidhyalay rewa madhya Pradesh)

सारांश :-

तंत्री नाद संगीत की विशिष्ट विधा है, जो साधक को ईश्वर से जोड़ती है। यहाँ पर साधक को संगीत में पूर्णतः खो जाना होता है। यदि हमारी पूर्ण निष्ठां व श्रद्धा न हो तो हमें संगीत की इस ईश्वरी विधा की ओर नहीं जाना चाहिए।

तंत्री नाद भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक विशेष गीत प्रकार है। यह गीतों के आवृत्तियों की प्रतीक्षा के आधार पर गाया जाता है, यह गीत उच्च आवृत्ति में गाया जाता है और एक निश्चित शीर्षक से प्रारम्भ होता है।

तंत्री नाद का इतिहास एक पुराने विद्रोह के असली कारणों और परिणामों को प्रकट करता है। तंत्री नाद का इतिहास हिन्दुओं के वैज्ञानिक संरक्षण के एक अहम् हिस्से के रूप में दिखाई देता है।

नाद, शास्त्र की एक प्रमुख विधि है जो शास्त्रीय गायन के लिए प्रयोग की जाती है। यह एक विशिष्ट गायन तथा संगीत की विधि है जो एक व्याकरण तथा एक नियमित ध्वनि प्रणाली का उपयोग करती है नाद, शास्त्र गायन की विशिष्ट विधि है।

मुख्य शब्द *:- तंत्री , तंत्र , नाद , ध्वनि , ध्यान योग , योग , गात्र वीणा*

शोध प्रविधि :- *इस लेख में द्वितीयक स्रोतों से तथ्य संकलन कर उनका सरलीकरण किया गया है इस शोध की प्रविधि वर्णात्मक है ।*

प्रस्तावना :-

तंत्री नाद की वैदिक पृष्टभूमि हिन्दू वैदिक मंत्रणाओं के आधार पर आधारित की गयी है। यह पुराने समय के प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृत को अनुभूति देता है और वहां के नाम और महिलाओं के विशेष अनुभव और विचारों को अभिव्यक्त करता है। तंत्री नाद एक वाद्य नाद है जो वस्तुओं के भेद के आधार पर उत्त्पन्न होता है। यह एक सुमधुर ध्वनि है जो सुबह के समय में उठकर सुनाई देती है। इस नाद को तंत्री नाद कहते है क्योंकि यह वस्तुओं में उत्त्पन्न होने वाला विभिन्न धर्म के संतुलन को निर्धारित करता है। इस नाद का वर्णन करते हुए इसे एक स्वर जैसा वर्णन किया जाता है जो सुनने वाले के अंतर मन तक नाद का सुमधुर स्वर है जो मन को शांति देता है और उस मन को ध्यान की अवस्था में ले जाता है। तंत्री नाद को सुनने मात्र से मन का समत्त्व बढ़ता है और मन स्वस्थ रहता है और मन स्वस्थ है तो शरीर स्वस्थ है। जैसा कि बिहारी ने अपने सुप्रसिद्ध दोहे में कहा है -

" तंत्री नाद, कबित्त रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े , तरे जे बूड़े सब अंग॥"

इस दोहे का बहुत ही गहरा अर्थ है और अर्थ कई स्तरों पर हमें रसानुभूति करता है। सामान्य रूप से इस दोहे का अर्थ समझे तो यहाँ पर कवि ललित कलाओं की बात कर रहे हैं जहाँ पर वीणा वाद्य स्वर व काव्य में खो जाने वाला व्यक्ति ही कला को समझ सकता है।

दुसरे स्तर पर यह दोहा संसार सागर को पार करने के लिए है। जो भक्ति और अच्छाई में पूरी तरह नहीं डूबा है वह भव सिंधु में ही फस कर रह जायेगा जो व्यक्ति तंत्री नाद में आल्हादित हो उठता है वह व्यक्ति ईश्वर में लीन हो जायेगा वह भव सागर पार कर लेगा। तंत्री नाद का अर्थ सम्पूर्ण तन्मयता से है। किसी भी काम में पूरा चित्त लगाने पर ही उसका कोई अर्थ रह जाता है। इस प्रकार ये दोहा जीवन जीने की एक शैली भी बताता है।

नाद, अनहद नाद का ही एक स्वरुप है। आकाश में, हवा में, समुद्र की लहरों में, मानव ह्रदय में जो लय, जो ताल , जो नाद है उन सब की अनुभूति करना संगीत का अंतिम ध्येय है। जीवन लेते हुए आनंद और शरीर छोड़ने पर मुक्ति ये दोनों ही काम तंत्री नाद से साध्य होते है।
तंत्री नाद गायन शैली में बिहारी के दोहों का विशेष स्थान है यहाँ एक अन्य दोहा इस प्रकार है -

" अव तजि नाऊ उपाव कव , आये पावस मास।
खेलु न रहिबो खेम सौ , केम कुसुम की वास।। "

तंत्री नाद की विशेषता के अनुरूप ही इस दोहे में एक से अधिक स्तर पर अर्थ समाहित है। सामान्य रूप से देखें तो एक सखी दूसरी से कह रही है कि तू अब अपनी अकड़ छोड़ दे बर्षात का मौसम है कदम्ब के फूलों की खुशबू चारों और फैली हुई है अब तेरे पास अब और उपाय नहीं है , तू अकेली अब नहीं बैठ सकती ये माहौल ही ऐसा है जिसमे अकेले रहना संभव नहीं है। इस लिए तू अपनी अकड़ छोड़ दे तू अब अकेली नहीं रह पायेगी ,तू अपने पति के पास चली जा।

दुसरे स्तर पर पति ईश्वर है और मनुष्य साधक है। जैसी तीव्रता अपने पति के पास जाने के लिए होती है उससे भी कहीं अधिक तीव्रता ईश्वर प्राप्ति के लिए होती है। जब वातावरण निर्मित हो जाता है, जब उचित समय आ जाता है तब मनुष्य ईश्वर में लीन हो ही जाता है।

तंत्री नाद स्वाभाविक रूप से बांसुरी की ओर आकर्षित होता है। यह कृष्ण और गोपियों को इंगित करता है आगे चलकर बांसुरी, वीणा, सारंगी, शहनाई, सरोद। ..... इत्यादि सभी को समेट लेता है। इस अनंत अनहद नाद में स्वर और काव्य का अनोखा संगम होता है।

गायन की प्रतिध्वनि शैली को तंत्री नाद का अभिन्न अंग माना गया है यहाँ पर वैकल्पिक गायन महत्त्वपूर्ण हो जाता है। अक्सर ही हम देखते हैं कि कलाकार दो या दो से अधिक गायको के साथ गाते हैं। सहयोगी गायकों की भूमिका कम नहीं होती है, वो नाद को आगे ले जाते हैं। प्रतिध्वनि गायन सदा से ही महान माना गया है। अनेक संस्कृतियों में, लोक प्रचलन में तथा लोकप्रिय गायन में सहयोगी गायन ही वाद्य और सुरों का प्रभाव गहरा करता है। इसका वर्णन पुराने नियमों में भी मिलता है। यदि हम पश्चिमी गायन को देखें तो जियोम्बी, गैब्रियलि , जोहान सेबेस्टियन बाख ने 16 वीं शताब्दी में इस सिद्धांत का बखूबी प्रयोग किया इसे पॉली कोरल या सिपिलत चॉइस गायन कहा गया। इसकी तुलना उत्तरदाइत्व गायन से की गयी यह गायन की वह शैली है जिसमे एक नेता कोरस के साथ मात्र वैकल्पिक रूप में उपस्थित होता है। इसे कॉल - एंड - रिस्पॉन्स गायन के रूप में भी जाना जाता है।

भारत में भजन और कव्वाली, नाद स्वरों के बेजोड़ उदाहरण हैं जहाँ पर मण्डली, पंक्तियाँ दोहराती हैं और प्रतिध्वनि को आगे लेकर जाती है। तबला, डमरू, झांझ, मंजीरा, ये सभी प्रकार के वाद्य हैं। मंत्रउच्चारण में

भी यह विधि लगाई जाती है नाद और नाद के संवर्धन को सौंदर्य वाहक कहा गया है क्यों कि यह कला प्रदर्शन का ध्येय पूरा करता है। विद्वानों का मानना है कि तंत्र व सुषिर वाद्य अपनी स्वर प्रधान क्षमता का प्रदर्शन करते हैं तथा अवनद्ध वाद्य लय को बांध कर सौंदर्य की वृद्धि करते हैं। नाद को बांधना और लय को बांधना ये दोनों कार्य साथ - साथ चलते हैं।

डॉ. गौरी खान ने लिखा है - " वैदिक काल से लेकर भारत तक के समय में वाद्यों का कोई निश्चित वर्गीकरण प्राप्त नहीं होता है।" सर्वप्रथम भरत ने ही चार प्रकार के वाद्य - तत्, अवनद्ध, सुषिर तथा घन वाद्यों का उल्लेख अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में किया है। परंपरागत रूप से तीन प्रकार के वर्गीकरण प्रचलित हैं - नाद आधारित वर्गीकरण, वादन आधारित वर्गीकरण एवं वादन क्रिया आधारित वर्गीकरण।
प्राचीन वैदिक युग में तंत्री वाद्यों में वीणा का सर्वाधिक महत्त्व पूर्ण स्थान था। तत्कालीन भारत में कई और तंत्री वाद्य प्रयोग किये जाते थे जिनमे से आजकल कुछ ही प्रचलन में हैं। आजकल प्रचलित अधिकांश तंत्री वाद्य इन्ही प्राचीन वाद्यों का बदला अथवा विकसित रूप है। सितार, सरोद, सुरबहार, स्वरमण्डल, रुद्रवीणा इत्यादि प्राचीन वीणाओ के संशोधित रूप हैं।

तंत्री का मूलतः अर्थ हम तार वाले वाद्यों से समझते हैं परंतु यहाँ यह बात स्पस्ट कर देना चाहते हैं कि तंत्री इस ईश्वरीय प्रदान शरीर को भी कहा गया है , हमारे कंठ को वीणा की संज्ञा दी गई है। इस संसार मे संगीत या किसी भी प्रकार के कला प्रेमियों का यह अनुभव है कि कोई व्यक्ति वीणा, सितार या चार प्रकार के वाद्यों तत, अवनद्ध, सुषिर, घन किसी भी प्रकार के वाद्य को बजाने पर पूर्णतः तल्लीन होकर उस ध्वनि की गहराई में उतरता है उसे परम आनंद की अनुभूति होती है । वहीं इसके विपरीत यदि बिना मन के बिना भाव के वाद्यों को छेड़ने से उनको कर्कश होने का अनुभव होता है तब यहाँ इनकी ध्वनि मे कोई आनंद शेष नहीं रह जाता वह मात्र ध्वनि प्रदूषण का कार्य करता है। यहाँ तंत्री अर्थात तार वाद्यों का विशेष महत्त्व तार वाद्यों मे स्वांस का उतार-चढ़ाव तथा उनसे उत्पन्न स्वयंभू स्वर का अनुभव मानो साक्षात जगत में ईश्वर प्राप्ति का आनंद देता है मानो यह जीवन सफल सा लगता है वह एक मधुर ध्वनि धीरे - धीरे शरीर को ऊर्जावान बनाती है। जो व्यक्ति राग - रागनी को सुनकर उसकी गहराई में डूबता है उसे राग - रागनी मे ही आनंद प्राप्त होने लगता है और यदि सिर्फ धुनों को सुन रहा है भाव में डुबकी नहीं लगा पा रहा है तो उस सुनने वाले व्यक्ति को राग - रागनी में कोई आनंद प्राप्त नहीं होगा ठीक उसी प्रकार जैसे बिना मन के जोरजबरदस्ती से किए गए कार्य से कार्य बिगड़ जाता है वहीं मन लगा कर ध्यानपूर्वक कार्य को करने से उस कार्य में सफलता होती है और उस सफलता का अनुभव आनंदमय होता है परंतु राग - रागनी को सुनने का आनंद उनमे डूब जाने पर ही प्राप्त होता है।

सारा अस्तित्व एक ऊर्जा का एक गूंज है जो कुछ भी भौतिक है जो नस्ट होने वाली है वह सब गूंज और आंदोलन है। जहां कंपन है वहाँ ध्वनि होना ही है अर्थात यह कहना सही होगा कि सृस्टि का रचयिता ध्वनि है और यह ध्वनि ही नाद है इस शरीर रूपी वीणा को भी तंत्री नाद कहते हैं जहां तंत्री मतलब तन से है तथा नाद मतलब ध्वनि से है। अतिशह: तृष्णा अर्थात अत्यधिक ईच्छा प्रबल होना , किसी चीज को पाने पूर्ण एकाग्रता, तन्मयता पूरे मनोयोग के साथ हम कार्य को सम्पन्न करते हैं वहाँ इन सब के समन्वय से जो आनंद प्राप्ति हुई उसे तंत्री नाद कहते हैं। ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भी इन्ही सब से होकर गुज़रता है ।

तंत्री नाद भारतीय संगीत में एक महत्त्वपूर्ण तथा प्रभावशाली सांगीतिक प्रणाली है इसे वाद्ययंत्र (तंत्र वाद्य) के माध्यम से उतत्पन्न किया जाता है जिसमे वादक एक यंत्र की सहायता से विभिन्न ध्वनियों को प्रस्तुत करता है। इस प्रणाली मे वाद्य यंत्र विभिन्न तारों, सितारों, धागों, तथा ध्वनिक क्षेत्रों के संगम से बने होते हैं । तंत्री नाद को विभिन्न सांगीतिक प्रदर्शनों जैसे कि क्लासिकल संगीत घराने के धुन, लोक संगीत और

भजनों में उपयोग किया जाता है। इस प्रणाली मे यंत्रों की अनूठी ध्वनि एवं तान उच्च स्वरों मे प्रकट होते हैं जो संगीत को अत्यंत मनोहारी बनाती है।

तंत्री नाद का उद्भव भारतीय संगीत इतिहास में हुआ है और यह पश्चिमी भारत में प्रचलित हुआ है। यह संगीत प्रणाली अद्वितीयता और उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है और इसे ध्यान देने योग्य एक कला माना जाता है।

तंत्री नाद की उत्पत्ति और विकास शास्त्रीय संगीत के समूह और अद्वितीय परंपरा से जुड़ी हुई है इसमे मुख्य रूप से श्रुति (स्वर संग्रह) और लय (तालमान) के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का उपयोग होता है। तंत्रीनाद विद्वानों द्वान निर्मित संगीतिय रचनाओं के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जिसमें ध्वनियों, तालों, स्वरों और लय के विभिन्न पहलुओं को जोड़कर एक सांगीतिक कविता या कहानी बनाई जाती है।

तंत्रीनाद के विविध आयाम :- तंत्रीनाद विविध आयामों पर आधारित है जो इसे एक समृद्ध और गहन संगीतीय पद्धति बनाते हैं ये आयाम निम्न लिखित हो सकते हैं -

1. **श्रुति :-** यह संगीत का मूलभूत तत्व है और स्वरों के न्यूनतम इकाइयों को सांकेतिक करता है श्रुति सूक्ष्म से सूक्ष्म ध्वनि है जिन्हे सुना जा सकता है यह तंत्रीनाद में स्वरों की सूक्ष्मता गहराई को बढ़ा देता है जिससे श्रुतियों को भी स्पस्ट सुना जा सकता है।
2. **स्वर :-** स्वर संगीत की मुख्य ईकाई है संगीत में स्केल विभिन्न स्वरों का चलायमान करती है स्वरों से ही राग की विशेषता का राज चुप होता है और रागों के माध्यम से विभिन्न रसों को उत्पन्न किया जाता है।
3. **राग :-** राग के माध्यम से विभिन्न भावनाओं को उत्पन्न किया जाता है राग स्वरों के व्यवस्थित संयोग से बनते हैं। प्रत्येक राग का अपना रस तथा उनके गायन में स्वर लगाने का तरीका अलग - अलग होता है। स्वर गीतियों, आलापों, जोड़ी बंदी और प्रभावशाली तरीके से बजाए जाने के माध्यम से पहचाने जाते हैं।
4. **ताल :-** ताल संगीत में लय, ताल और तालिका के माध्यम से मापक होते हैं ताल से ही राग को सुंदर स्वरूप दिया जाता है यह एक आवर्तन का व्यवस्थित आयाम होता है।
5. **लय :-** संगीत की गतिशीलता, तालमान ताल गतियों को संकेतित करता है लय संगीत में समय और ध्वनि के अंतर को नियंत्रित करने में मदद करता है। लय संगीत के अंतर्गत लयकारी, ताल की गति का निर्धारण किया जाता है ये सभी आयाम संगीतिय रचनाओं को आकर्षक बनाते हैं और संगीत को आनंदमय बनाते हैं । लय के माध्यम से विलंबित, मध्य, व तीव्र भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।

तंत्री नाद का वाद्ययंत्रों से संबंध ;- यह हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति होने के कारण इसमें भारतीय वाद्ययंत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। तंत्रीनाद का ध्यान मुख्य रूप से रागों, स्वरों, लय, और ताल पर रखा जाता है । तंत्री नाद में वाद्ययंत्रों का महत्त्व रागों के भाव - विभाव को व्यक्त करने के लिए होता है ये वाद्ययंत्र रागों के स्वरों को गाने और उनके संयोजन के लिए उपयोग होते हैं। कई प्रमुख वाद्य यंत्र जैसे कि सितार, तानपुरा, वीणा, सरोद, सहनाई, तबला, पखावज इत्यादि इस पद्धति में संगत वाद्य के रूप में उपयोग होते हैं। वाद्ययंत्रों के माध्यम से संगीतीय कलाकार रागों के विभिन्न अंशों को जोड़कर संगीत को आकर्षण और मधुर बनाते हैं। इन वाद्यों के अलंकार भारतीय संगीत की विशेषताओं में से एक हैं इस प्रकार तंत्रीनाद का वाद्ययंत्रों से गहरा संबंध है जो भारतीय संगीत को उसकी पहचान और विशिष्ट ध्वनि प्रणाली प्रदान करता है।

वाद्यों के संयोजन और बाजगीरी से ताल, लय, और स्वरों का निर्माण होता है यह तंत्रीनाद के महत्त्वपूर्ण तत्व हैं राग की गहराई को बढ़ाते हैं और वाद्ययंत्रों के स्वर गुंजन की ध्वनियाँ और ताल को मिलाने से तंत्रीनाद का निर्माण होता है जिसेसे सांगीतिक रस और आनंद का अनुभव होता है। उदाहरण के लिए - एक सरोद या एक सितार के स्वर संयोजन से राग की विशेषताएं और रंग प्रकट होते हैं. पखावज, तबला और घंटी जैसे ताल यंत्रों

के द्वारा संगीत में लय और ताल प्रदर्शित होते हैं। तंत्री नाद में वाद्ययंत्रों का स्थान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है इसके विकास में वाद्ययंत्रों के संयोजन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
प्राचीन काल में वीणा, सरोद, सहनाई, मृदंग, पखावज , बाँसुरी और घंटी जैसे वाद्यों का प्रयोग होता था तथा मध्यकाल में भी इसकी साधना पं. रविशंकर , माँ अन्नपूर्णा देवी , पं. हरिप्रसाद चौरसिया, उस्ताद सुल्तान खान इत्यादि जैसे महान कलाकार करते आ रहे हैं।

निष्कर्ष :-

तंत्रीनाद ईश्वर साधना का एक अद्वितीय प्रयास है जिसमें योगी तंत्री नाद के माध्यम से आत्मा के साथ संयोजन का प्रयास करता है इस प्रयास मे ध्यान और अभ्यास के माध्यम से व्यक्ति ईश्वर के साथ एकाकार होने के लिए अपने आप को योग्य बनाता है जैसा की ऊपर वर्णन किया गया है कि तंत्रीनाद ध्वनियों का एक विशेष प्रकार है जो आध्यात्मिक साधना में मन को एकाग्र करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसके माध्यम से मन, शरीर, आत्मा, को संतुलित करने का प्रयास निरंतर किया जाता है जिससे व्यक्ति आत्मा और परमात्मा के बीच एकता को महसूस कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. संगीत और रस, dr. अनीता रानी, रिसर्च पेपर ugc jornal
2. भारतीय संगीत के प्रमुख तंत्री वाद्यों का भेद एवं वर्गीकरण, dr. गौरी, SRJIS रिसर्च पेपर
3. भारतीय संगीत के तंत्री वाद्य, डॉ. प्रकाश महाडिक
4. तंत्रीनाद स्वरञ्जली, प्रो. साहित्य कुमार नाहर
5. नाद बिन्दु , डॉ. जोगिनडेर कॉरो
6. संगीत जिज्ञासा और समाधान, तेज सिंह
7. ध्वनि और संगीत, प्रो. ललित किशोर सिंह
8. नाद सुनना पड़ता है, प्रियंका मिश्रा